काव्यरूप

हमारा परिवेश

5

मिशन शिक्षण संवाद

बेसिक काव्य सृजन

New Text

काव्य सृजन
सीमा कुमारी (प्र०प्र०अ०)
प्राथमिक विद्यालय कादरीबाग
ब्लॉक - डिबाई, बुलन्दशहर

पाठ -1

परिवार कल, आज और कल

खुशियाँ बरसे वहाँ अपार,
संग जहाँ रहता परिवार।
सदा न रहता एक आकार,
घटता बढ़ता है परिवार।।

जन्म अगर ले नन्ही किलकारी,
बढ़ती है कुल की फुलवारी।
कोई अपना छोड़े जब संसार,
घट जाता है तब परिवार ।।

शादी की जब बजे शहनाई,
घर में जब नई दुल्हन आयी।
नए शहर हो जाए बदली,
परिवार में भी आये तब्दीली।।

कम और रोजगार की खातिर,
छोड़े जब कोई अपना गांव।
नए शहर नए लोगों के संग,
जुड़ जाता है प्रेम लगाव।।

पाठ-2

मेरा परिवार मेरी प्रेरणा

सबसे प्यारा जग से न्यारा,
सबका रखता ध्यान ये सारा।
जीवन जीना हमें सिखाता,
ऐसा है परिवार हमारा।।

नये पकवान बनाती नानी,
रोज सुनाती नई कहानी।
भैया को संगीत है भाता,
नई प्रेरणा हमें दिलाता।।

भैया मेरे देख न पाते
उनके काम आती है ब्रेल,
जिसने इस भाषा को था बनाया,
नाम था उसका लुई ब्रेल।।

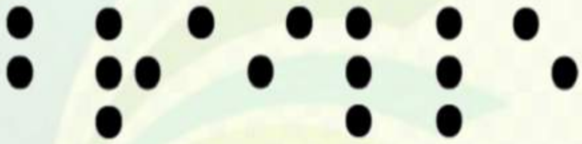

भैया की रुचि संगीत में भारी,
पर मुझे तो भाये उनकी ईमानदारी।
भैया की सीख लगती प्यारी,
प्रेरणा देती हमको न्यारी।।

पाठ-3

गौरव पुरूस्कार

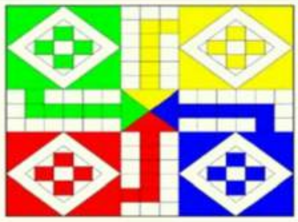

स्वस्थ तन में रहता स्वस्थ मन,
खेल बनाते स्वस्थ जीवन।
बच्चों के विकास में सहायक,
खेल हमारे व्यक्तित्व के परिचायक।।
बच्चों अब जानो ये बात,
खेलों के हैं कितने प्रकार?
अंदर जो खेलें वो इंडोर,
मैदान में जो खेलें वो आउटडोर।।
लड़के-लड़की का न कोई खेल,
सब मिलकर खेलें सब खेल।
पी टी उषा है दौड़ चैम्पियन,
बुला चौधरी है तैराकी चैम्पियन।।

सानिया मिर्ज़ा टेनिस स्टार,
साक्षी मालिक कुश्ती स्टार।
मैरी कॉम की बॉक्सिंग कमाल,
सरदार सिंह की हॉकी बेमिसाल।।
साइना नेहवाल बैडमिंटन जांबाज़,
लंबी कूद में अंजू बॉबी जार्ज।
विराट कोहली की क्रिकेट में धूम,
शतरंज में विश्वनाथन आनंद की धूम।।

पाठ-4

आओ मिलकर खेलें खेल

आओ मिलकर खेलें खेल,
खेल-खेल में बढ़ता मेल।
सबके मन है आज मगन,
खेलों का हुआ है आयोजन।।
अनिकेत भैया है कबड्डी चैंपियन,
खेल में कर उत्कृष्ट प्रदर्शन।
सम्मानित होंगे वह आज,
गांव है करता उन पर नाज़।।
बेशक मोहित का है पैर खराब,
पर हिम्मत है उसकी लाजवाब।
अनिकेत भैया ने दी हिम्मत,
खेल में आगे बढ़ेगा मोहित।।
राष्ट्रीय खेल हॉकी के चैंपियन,
29 अगस्त यादगार है दिन।
मेजर ध्यानचंद का जन्म दिवस,
29 अगस्त है खेल दिवस।।

पाठ-5

जीव-जन्तुओं की रोचक बातें

दुनिया है यह अजीबोगरीब,
भिन्न-भिन्न यहां है जीव।
किसी की होती तेज नजर,
तो कोई सूँघे हर सुगंध।।
कोई तो हल्की आहट भी सुन ले,
तो कोई भागे है सरपट।
चील, बाज और गिद्ध की नजर है तेज,
कुत्ते की है नाक बड़ी तेज।।

शेर, चीता, बिल्ली सूंघें शिकार,
चींटी सूंघकर बनाए मार्ग।
सांप बेचारा कुछ ना सुनता,
वह सब कुछ महसूस है करता।।
चमगादड़ हर ध्वनि सुन पाती,
भोजन का अनुमान लगाती।

सबसे निराला लंगूर विशेष,
आवाज निकाल देता संदेश।।
उल्लू, चमगादड़ सोते हैं दिन में,
छिपकली सोती सर्दी के मौसम में।
जीव अधिकतर रात में सोए,
कुछ होते जो दिन में ही सोए।।

पाठ-6
वन्य जीवों का संरक्षण

प्रकृति ने किया हम पर उपकार,
जीव जन्तु का दिया उपहार।
यह है हमारे सच्चे सहयोगी,
जीवन के लिए बहुत उपयोगी।।

वन में जो रहते हैं जीव,
वन्य जीव कहलाते हैं।
घर में जो आते हैं काम,
पालतू है उनका नाम।।

अपने स्वार्थ की खातिर मानव,
वन-उपवन नष्ट करता है।
ऐसा करके वन जीवन को,
तहस-नहस वह करता है।।

घर से बेघर होकर यह जीव,
संकट में आ जाते हैं।
मानव की लोलुपता की बेदी पर,
भेंट बेचारे चढ़ जाते हैं।।

वन्यजीवों की रक्षा की खातिर,
कानून बनाती है सरकार।
खाल, दांत, सींग और हड्डी का,
रोक दिया है अब व्यापार।।

इनका कोई शिकार करे ना,
इसलिए बने राष्ट्रीय उद्यान।
अभयारण्य बना सरकार ने,
किया है एक काम महान।।

20 मार्च गौरैया दिवस है,
सदा रखना तुम यह याद।
संकटग्रस्त जीवों का रखे हिसाब,
रेड डाटा बुक है वह किताब।।

कभी सताओ ना इन्हें तुम,
बड़े काम ये आते हैं।
मानव जीवन की खातिर ये,
कितने कष्ट उठाते हैं।।

पाठ-7

1-जंगल और जन जीवन

जंगल की शोभा बड़ी निराली,
चहुँ ओर इसमें हरियाली।
वृक्ष यहाँ के सच्चे मोती,
इनसे मिलती जीवन ज्योति।।

इनको तुम निष्प्राण न समझो,
इनमें भी होता है जीवन।।
इनसे ही हमको मिलती है,
प्राणवायु ऑक्सीजन।।

जंगल से तुम रखो लगाव,
रोकें ये मिट्टी का कटाव।।
इनसे होता सुखद सवेरा,
इन पर करते जीव बसेरा।।

कागज, कत्था, दियासलाई,
रबर,बांस,औषधि,चटाई।।
इनसे ही सब मिलते हैं,
उद्योग सारे फलते हैं।।

2-प्रारंभिक मानव जीवन

आओ बच्चों तुम्हें सुनाए,
कहानी मानव विकास की।
कैसे रहता हो जंगल में?
उसके क्रियाकलाप की।।

पहले वह बन्दर की भांति,
चार पैर पर चलता था।
धीरे-धीरे हुआ विकास तो,
दो पैरों पर चलने लगा।।

रहता था वह खुले गगन तले,
कंद-मूल,फल खाता था।
पत्थर के रखता था हथियार,
करता था जीवों का शिकार।।

जब देखी उसने चिंगारी,
सहसा था वह डर गया।
भुने माँस का स्वाद चखा जब,
पता आग का चल गया।।

मानव ने समझा जब,जग को,
बनाए पत्थर के औजार।
घास उगी जब उसने देखी,
खेती का तब आया विचार।।

पशुओं का किया उसने पालन,
ताँबे को भी खोज निकाला।
मन में आया नया विचार,
तो पहिए का हुआ अविष्कार।।

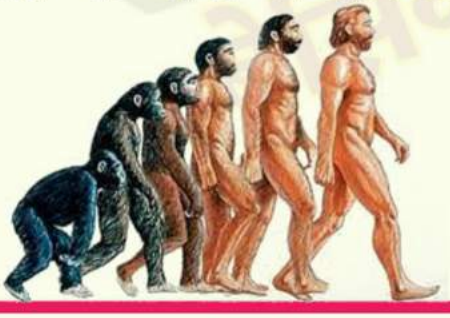

पाठ-7

3-जंगल और आदिवासी

जंगल के हैं ये वासी,
कहलाते हैं आदिवासी।
जंगल से ही इनका जीवन,
उनके बिन जंगल है निर्जन।।
पेड़ों का है करते उपभोग,
करते हैं इनका यह सदुपयोग।
जितना यह जंगल से लेते,
उतना ही वापस भी करते।।
निजी स्वार्थ की खातिर मानव,
वन विनाश करता जाता।
ऐसा करके वह खुद जीवन को,
विषमय है,करता जाता।।
यह है जंगल के रखवाले,
हर विपदा से इन्हें बचाने वाले।
जंगल से इनका है लगाव,
कानून भी करता है इनका बचाव।।

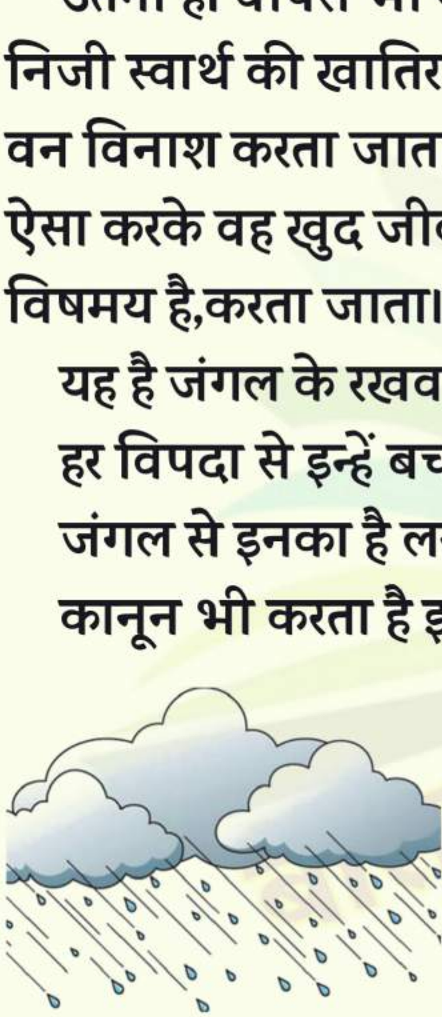

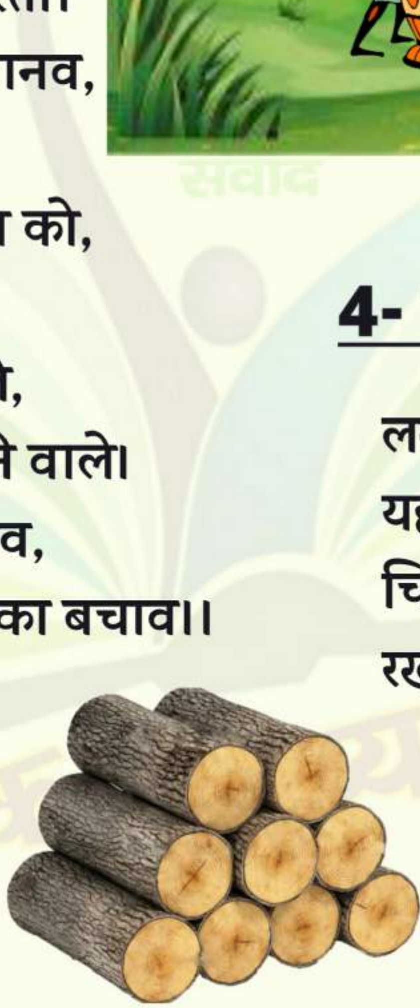

4- वनों का बचाव

लकड़ी, पानी और बयार,
यह है जंगल के उपकार।
चिपको आंदोलन का यह नारा,
रखना बच्चो सदा तुम याद।।
वन रक्षा की खातिर आई,
योजना सरकार की।
नाम उसका याद कर लो,
सामाजिक वानिकी।।
पहाड़ी इलाकों का है �

पाठ-8

भोज्य पदार्थों का संरक्षण

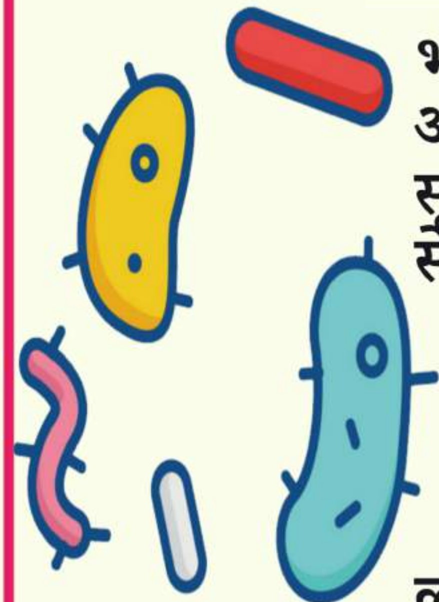

भोजन से मिलता है पोषण,
आवश्यक इसका संरक्षण।
सूक्ष्मजीव इसे जो करें खराब,
सेहत पर पड़े प्रतिकूल प्रभाव।।

दीर्घकाल तक भोजन रखने से,
पैदा होते फफूंद और जीवाणु।
पोषक तत्वों को करके नष्ट,
सेहत को ये पहुंचाते कष्ट।।

लंबे समय जो करना हो,
भोज्य पदार्थों का उपयोग।
बच्चों संरक्षण विधियों का,
करना सीखो तुम प्रयोग।।

भोज्य पदार्थों को सुखाना,
कहलाता है निर्जलीकरण।
ठंडे स्थान पर इनको रखना,
ये कहलाता है प्रशीतन।।

तापमान अधिक बढ़ने पर,
जीवाणु हो जायें नष्ट।
दूध और पानी उबालकर पियो,
स्वस्थ और मस्त जीवन जियो।।

चटनी, आचार, मुरब्बों का तुम,
रसायन प्रयोग से करो संरक्षण।
तेज गरम फिर करो एकदम ठंडा,
कहलाता है पाश्चुरीकरण।।

पाठ-9
हम और हमारी फसलें

किसान को देखकर करो नमस्ते,
सबके लिए वो अन्न उपजाये।
जीवन भर कठिन मेहनत करता,
सबका अन्नदाता कहलाता।।
मिट्टी के होते कई प्रकार,
बलुई, चिकनी, दोमट और सिल्ट।
अलग-अलग इनकी उपयोगिता,
अलग-अलग उनकी पहचान।।
भिन्न-भिन्न ऋतुओं के आधार पर,
फसलों के हैं भिन्न प्रकार।
खरीफ, रबी और जायद सुन लो,
फसलों के यह तीनों प्रकार।।

धान, ज्वार, मक्का, बाजरा,
मूंग, उड़द और कपास।
खरीफ फसलें हैं ये सारी,
वर्षा ऋतु में बोई और जाड़े
में काटी जाए।।
गेहूँ, जौ, चना, मटर, अलसी,
अरहर, आलू, सरसों, राई।
रबी फसले यह सारी हैं,
जाड़े में बोकर गर्मी में काटे।।
सब्जी, ककड़ी, तरबूजा,
या हो स्वादिष्ट खरबूजा।
जायद की फसलें हैं यह सब,
गर्मी में बो कर बारिश में
काटी जाती।।

2- खेतों के लिये सिंचाई एवं खाद

आओ जानो भाई-बहन,
सिंचाई के क्या-क्या है साधन।
तालाब, झील, नदी, नलकूप,
इनसे सींचे किसान फसल।।
ड्रिप और स्प्रिंकलर सिंचाई,
नई पद्धति के हैं ये साधन।
फल, फूल, सब्जी सींचे ड्रिप,
गेहूँ और मटर को सींचे स्प्रिंकलर।।
मिट्टी को उपजाऊ बनाने हेतु,
खाद उपयोग में लाई जाती।
दो प्रकार की होती है खाद,
जैविक व रासायनिक खाद।।

कीट-पतंगों से बचाकर,
किसान फसल उगाता है।
पक जाती है जब फसल,
मेहनत हो जाती है सफल।।
कटाई, मड़ाई और साई करके,
भूसा और दाना अलग करते।
अनाज को अच्छी धूप दिखाकर,
फिर उसका भण्डारण करते।।

पाठ-10
पेड़-पौधों का भोजन

1-पेड़-पौधों का भोजन

पेड़ हमें देते हैं पोषण,
सबके लिए बनाते भोजन।
स्वयं ही अपना भोजन बनाते,
इसलिए स्वपोषी कहलाते।।
जड़, मिट्टी से करती है,
जल और खनिज लवण अवशोषण।
भोजन बनने की क्रिया,
कहलाती है प्रकाश संश्लेषण।।

कार्बन डाइ ऑक्साइड मिली हवा से,
ऊर्जा सूरज के प्रकाश से।
पौधों की पत्ती में है शामिल,
हरे रंग का क्लोरोफिल।।
सब मिल जाएँ साथ में जब,
बनता है तब भोजन।
भोजन के संग हम को मिलती है,
प्राणवायु ऑक्सीजन।।

पर्णरन्ध्र से पत्ती करती,
वाष्पोत्सर्जन और श्वसन।
वायुमण्डल शुद्ध है करती,
करके यह प्रकाश संश्लेषण।।
सड़े गले पदार्थों से करते,
भोजन ग्रहण मृतोपजीवी।
जो जीवित प्राणी के तन पर रहते,
कहलाते हैं वो परजीवी।।

कुछ पौधे ऐसे भी होते हैं,
जो कीट पतंगे खाते हैं।
वीनस फ्लाई ट्रैप, नेपेन्थिस,
कीटभक्षी कहलाते हैं।।

2-पौधे एवं जन्तुओं की परस्पर निर्भरता

भोजन की खातिर हर प्राणी,
एक दूजे पर निर्भर करता है।
भोजन निर्भरता के आधार पर,
विविध प्रकार वह रखता है।।

पौधों पर जो होता है निर्भर,
कहलाता है शाकाहारी।
माँस और मछली खाने वाला है माँसाहारी,
दोनों खाने वाला कहलाता है सर्वाहारी।।

एक दूजे को आहार बनाकर,
प्रकृति का करते हैं भला।
पर्यावरण का होता है संतुलन,
बनती है जब खाद्य श्रृंखला।।

पौधे-जन्तु एक दूजे के पूरक
करते प्रकृति का संतुलन।
कार्बन डाइऑक्साइड के बदले,
पौधे देते हैं ऑक्सीजन।।

पाठ-11

ऐसे भी होते हैं घर

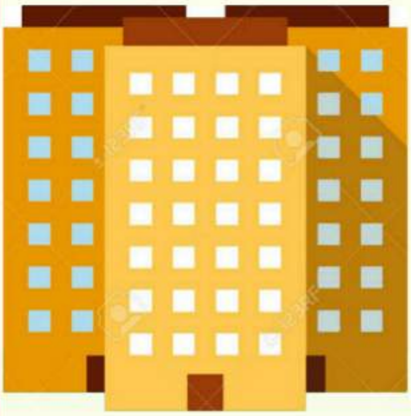

हर मौसम में हमें बचाता,
सुरक्षा का अहसास कराता।
कहते हैं आवास जिसे हम,
वो है अपना घर ये प्यारा।।

भिन भिन आकार है इसके,
अलग अलग हैं इसके प्रकार।
एकमंजिला, दोमंजिला,
या होता है बहुमंजिला।।

जहाँ अधिक पानी है बरसे,
वहां बाँस के घर हैं बनते।
बर्फीले स्थानों पर बनते,
बर्फ के घर को इग्लू कहते।।

गर्मी वाले स्थानों पर देखो,
मिट्टी वाले होते हैं घर।
लकड़ी से ये बनता है,
हाउसबोट है तैरता घर।।

पर्वतीय क्षेत्रों की शोभा,
बनते हैं पत्थर के घर।
छत इनकी ढालू है होती,
वर्षा से जो घर को बचाती।।

जिनका घर न परमानेंट,
वो बनाकर रहते टेंट।
ऐसे घर बनते हैं बच्चों,
जब आ जाए कोई आपदा।।

पाठ-12

आपदाएँ एवं उनसे बचाव

अचानक आ जाए जब विपदा,
कहलाती है वह आपदा।
बाढ़, भूकंप, आंधी या तूफान,
होता उनसे बड़ा नुकसान।।
प्रकृति में जो खुद आती है,
वह होती है प्राकृतिक आपदा।
मानव जिनको देता निमंत्रण,
वह है मानव जनित आपदा।।
भूमि का जब कांपे है तन,
तब आता है भूकम्प।
इससे जब हो तुम्हारा सामना,
हिम्मत से तुम काम लेना।।

आग बड़ी है विनाशकारी,
इससे होती तबाही भारी।
इसके समीप कभी मत जाना,
अग्निशमन यंत्र उपयोग में लाना।।
जब वर्षा होती है भारी,
पानी से भर जाए घर और द्वारी।
ऊँचे स्थान पर तुम चले जाना,
बिजली का उपयोग न करना।।

कोई आपदा जब भी आये,
धीरज से काम लेना।
आपदा प्रबंधन किट के समान को,
घर में तुम जरूर रख लेना।।

पाठ-13
जल है तो कल है

1- जल है तो कल है

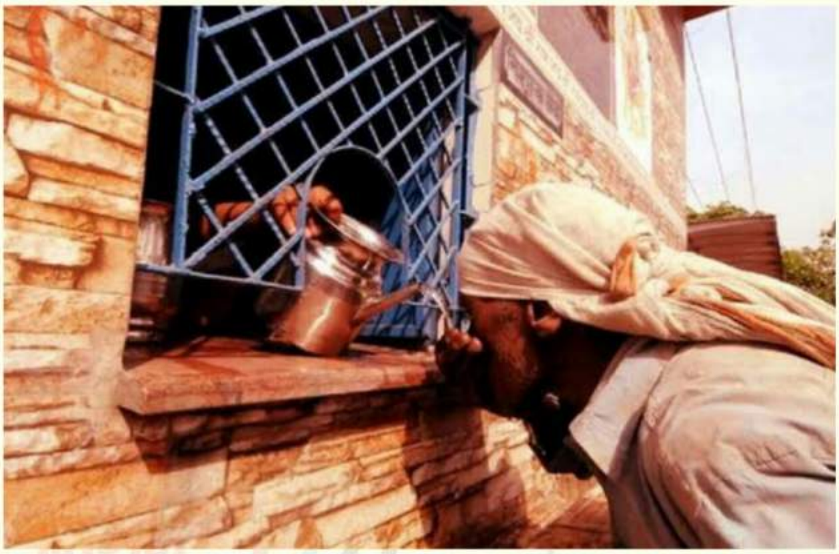

जनमानस को इस सच से,
आज तो रुबरु होने दो।
जल है एक अनमोल रतन,
इसे न व्यर्थ बहने दो।।
गर्मी में जल बहुत जरूरी,
किसी को ना प्यासा रहने दो।
प्याऊ लगाकर प्यास बुझाओ,
यात्रियों की सुविधा का ध्यान रखो।।
जल नहीं केवल मानव के लिए जरूरी,

जल नहीं केवल मानव के लिये जरूरी,
पौधों को भी इसकी जरूरत।
पौधों को मिलता है इससे पोषण,
सिंचाई के लिए यह अति आवश्यक।।
जब वर्षा होती है कम,
भूमिगत जल का करते उपयोग।
तालाब, कुआँ, नदी, नलकूप,
यह सब है सिंचाई के साधन।।

धान की फसल माँगे पानी की मात्रा भरपूर,
सरसों, मटर और गेहूँ न माँगे जल खूब।
ककड़ी, खरबूज और तरबूज,
माँगे पानी व तेज धूप।।

2- भूमिगत जल की पुनर्भरण की विधियाँ

आओ बच्चों हम बताएँ तुम्हें,
यह जल कहाँ से आता है।
जल मिलता हमें जमीन से,
यही हमारा जीवन है।।
यदि नियमित करते रहे प्रयोग,
एक दिन कम पड़ जाएगा।
जल वर्षा का जल भरता स्थल पर
कैसे नियमित रहे जल का स्तर।।
पानी का संकट ना आये,
इसका करो कोई निवारण।
वर्षा का जल संचय करके,
इसका करो सदा संरक्षण।।
प्रकृति का है जल अनमोल घटक,
इसको सदा ही नियमित रहने दो।
जितना जरूरी करो उतना प्रयोग,
व्यर्थ ना इसको बहने दो।।
जल संचय की कई है विधियाँ,
इनका कर लो तुम ज्ञान।
वर्षा जल का करो संचयन,
गड्ढों में करो पुनर्भरण।।

पाठ-14
जल के गुण एवं जल प्रदूषण

आओ जाने जल के गुण,
इसका कोई रूप न रंग।
इसका कोई न अपना आकार,
जिसमें डालो ले उसका आकार।।
जो घुलता है द्रव के अन्दर,
वह विलेय कहलाता है।
जो ना घुलता है द्रव में,
अविलेय पदार्थ कहलाता है।।

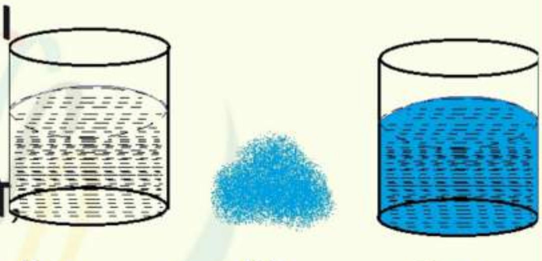

जिस द्रव में पदार्थ है घुलता,
विलायक उसको कहते हैं।
विलेय, विलायक के मिश्रण को,
बच्चों विलयन कहते हैं।।

अविलेय जल में आ जाए तब,
जल का हो जाता है प्रदूषण।
सूक्ष्मजीव पनपते इसमें,
बीमारी का बनते यह कारण।।
पेचिश, टाइफाइड, पीलिया और हैजा,
समझो ना इनको ऐसा वैसा।
दूषित जल से फैले ये रोग,
स्वच्छ जल का करो सदा प्रयोग।।

एनाफिलीज मच्छर मलेरिया फैलाता,
एडीस मच्छर डेंगू को फैलाता।
दूषित जल में पनपे मच्छर व विषाणु,
विषाणु फैलाए चिकनगुनिया।।
छानकर और उबालकर,
पानी को बनाएँ साफ।
लाल दवा डालें टंकी में,
वरना बीमारी ना करेगी माफ।।

पाठ-15

यात्रा

चन्दन, सूरज थे दो यार,
साथ में करते काम व्यापार।
एक दिन सूरज ने चन्दन को बताया,
शहर का सारा किस्सा सुनाया।।
सुनकर चन्दन ने सूरज की बात,
शहर जाने का रक्खा प्रस्ताव।
शहर में लगा गाड़ियों का मेला,
वहाँ पर था वाहनों का रेला।।
ट्रैक्टर लेने की मन में ठानी,
शहर जाने को कर ली रवानी।
रास्ते में देखी सीएनजी गाड़ी,
देख मन में जिज्ञासा उमड़ी।।

ट्रैक्टर उनके मन को भाया,
पर दाम उसका उन्हें रास ना आया।
दुकानदार ने समझायी युक्ति,
किस्तों पर कर लो बात पक्की।।

रहीम ट्रैक्टर लेकर गाँव आया,
ट्रैक्टर सबके मन को भाया।
रहीम ने दोनों यारों को,
ट्रैक्टर चलाना सिखाया।
ट्रैक्टर चलता था डीजल से,
बच्चों यह है एक प्रकार का ईंधन।
बच्चों सीएनजी का कर लो ज्ञान,
कम्प्रेस्ड नेचुरल गैस इसका नाम।।

पाठ-16
बीज ही बीज

पेड़ हमें देते हैं फल,
फल में होते हैं बीज।
नए पौधे को जन्म देने वाले,
बीज हैं बड़े काम की चीज।।

कुछ फल जैसे आम, बेर, जामुन,
इनमें होता है केवल एक बीज।
भिंडी, पपीता, अमरूद और टमाटर,
ये रखते हैं अनेक बीज।।
बीज के बाहर होता आवरण,
जिसको हम कहते हैं बीजचोल।
इसमें दो हल्के हरे रंग के पत्ते,
जिनको हम बीज पत्र कहते।।

दोनों बीज पत्रों के बीच में है भ्रूण,
जिससे नए पौधे का होता अंकुरण।
इसके नीचे का सफेद भाग है,मूलांकुर,
पीला भाग कहलाता है,प्रांकुर।।
मूलांकुर तने को जन्म देता,
प्रांकुर जड़ को है,बनाता।
हवा, पानी और हो उचित ताप,
अंकुरण की तब बने बात।।

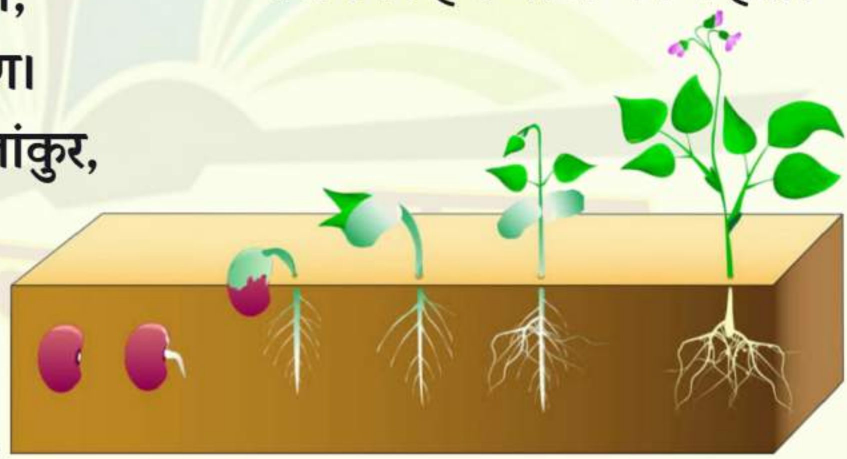

पाठ-17
विश्व में भारत
1- हमारी पृथ्वी- महासागर एवं महाद्वीप

देश हमारा प्यारा भारत,
निराली इसकी शान है।
पृथ्वी हमारी गोल है,
मॉडल इसका ग्लोब है।।
इसका 75% भाग है जल,
और 29% भाग है स्थल।
पांच महासागर है इस पृथ्वी पर,
सात महाद्वीप है अपनी धरा पर।।
अटलांटिक और हिंद महासागर,
आर्कटिक और दक्षिणी महासागर।
सबसे बड़ा महासागर है प्रशान्त,
सबसे गहरा इसमें मेरियाना गर्त।।
29% के स्तर पर फैले सात महाद्वीप,
एशिया है सबसे बड़ा महाद्वीप।
माउण्ट एवरेस्ट सबसे ऊँची चोटी हिमालय की,
यहां 29% जनता निवास करती।।

भिन्न-भिन्न है धरा के रूप,
कहीं मैदानी तो कहीं पठारी।
पर्वत है यहाँ समूहों में,
जो कहलाते हैं पर्वत श्रेणी।।

विश्व के हैं यह प्रमुख पठार,
पामीर का पठार और तिब्बत का पठार।
भारत में है दक्कन का पठार,
यह बात पर कर लो विचार।।
गंगा, सिंधु, सतलज और गोदावरी,
इरावदी, नील, जायर और मिसिसिपी, मिसौरी।
नील है विश्व में सबसे लंबी नदी,
यह है विश्व विख्यात सारी नदी।।

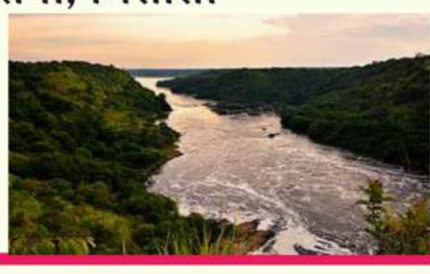

2-हमारा देश भारत

देश हमारा प्यारा भारत,
राजधानी नई दिल्ली है।
चीन, नेपाल, भूटान, पाकिस्तान,
यह हमारे पड़ोसी हैं।।
राज्य इसमें 28 हैं अब,
नौ हैं केंद्र शासित प्रदेश।
पाँच भागों में बटी संरचना,
बात यह हमने जानी है।।
पर्वतराज हिमालय अपना,
भारत के उत्तर में फैला है।
अधिकतर नदिया जन्मी यहां से,
नदियों का यह उद्गम है।।
पंजाब से आसाम तक,
उत्तर का है विशाल मैदान।
सतलुज, गंगा, यमुना, चम्बल,
यहां की है नदियाँ महान।।
थार मरुस्थल है पश्चिम में,
दक्षिण में है पठारी भाग।
तट के सहारे हैं तटीय भाग,
अंडमान निकोबार दीप समूह है।।
जैव विविधता है अपने वतन में,
पाँच प्रकार के वन है।
वन में रहते वन्य जीव है,
संतुलन पर्यावरण का करते हैं।।

पाठ-18

भारतीय संविधान और शासन व्यवस्था

1- भारतीय संविधान

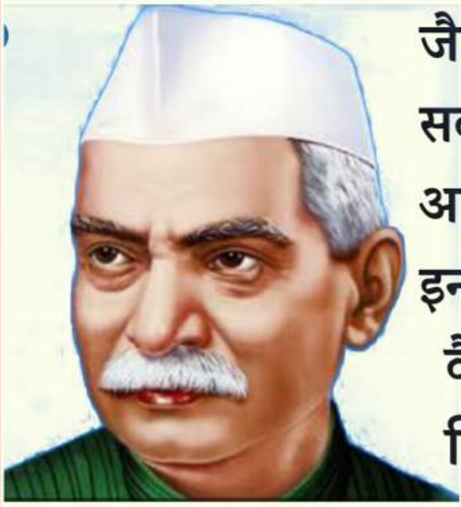

जैसे घर और विद्यालय में,
सब मिलकर करते सब काम।
अपने हम कुछ नियम बनाते,
इन नियमों का पालन भी करते।।
वैसे ही यह देश चलता है,
नियमों का पालन करता है।
इन नियमों से मिलकर ही,
अपना संविधान भी बना है।।
संविधान बनाने की खातिर,
संविधान सभा थी बनायी।
इसके अध्यक्ष बनाए थे,
प्रथम राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद।।
संविधान प्रारूप बनाने हेतु,
प्रारूप समिति गठित हुयी।
डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर
अध्यक्ष इसके नियुक्त हुए।।
2 वर्ष और 11 माह,
18 दिन परिश्रम अथाह।
26 जनवरी 1950 को लागू किया,
गणतंत्र दिवस के रुप में मनाया।।

2- हमारा संघीय शासन

भारत अपना देश महान,
सब देशों में इसकी शान।
28 इसमें राज्य हैं अब,
नौ हैं और केन्द्रशासित प्रांत।।
तीन अंग है केन्द्र सरकार के,
तीनों के अलग हैं काम।
व्यवस्थापिका कानून बनाती,
कार्यपालिका लागू उन्हें करती।
न्यायपालिका न्याय है करती,
तीनों महत्वपूर्ण है होती।
व्यवस्थापिका को संसद कहते हैं,
5 वर्ष को जन सदस्य सुनते हैं।।
18 वर्ष के जब हो जाओ,
अपना वोट प्रयोग में लाओ।
लोकसभा में सांसद बैठे,
विधानसभा में विधायक होते।।
देश के प्रथम नागरिक होते हैं,
राष्ट्रपति जी उन्हें कहते हैं।
कार्यपालिका प्रमुख यह होते,
तीनों सेना के सेनापति होते।।
सबसे बड़ा सर्वोच्च न्यायालय,
राज्य में होता उच्च न्यायालय।
जिला स्तर पर जिला न्यायालय,
निचले स्तर पर होते अन्य न्यायालय।।

पाठ-19
राष्ट्रीय एकता

भारत अपना प्यारा देश,
जिसकी है एक बात विशेष।
अनेकता में भी है एक,
यह बात बनाती इसको नेक।।
भिन्न-भिन्न बोली है यहां पर,
अलग-अलग भाषाएं हैं।
खान-पान पहनावा अलग है,
त्योहारों की धूम है।।

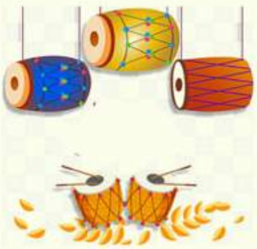

यहाँ दशहरा, दिवाली, होली,
क्रिस्मस, बैसाखी और ईद है।
स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस,
और गाँधी जयंती राष्ट्रीय पर्व हैं।।

मोर हमारा राष्ट्रीय पक्षी,
राष्ट्रीय पशु बाघ है।
कमल हमारा राष्ट्रीय पुष्प है,
कीचड़ में भी शान है।।
राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा अपना,
इसकी अनोखी शान है।
केसरिया सफेद और हरा,
तीन रंग पहचान है।।

राष्ट्रगान जन गण मन,
जिसे लिखा रवीन्द्र नाथ टैगोर ने।
वन्दे मातरम राष्ट्रगीत हमारा
रचा बंकिम चन्द्र चटर्जी ने